Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.3
ISSN No. 2456-1665

भारतीय समाज में नारी जीवन

डॉ. ए. एस. बिक्कड
हिन्दी विभागाध्यक्ष
राष्ट्रमाता इंदिरा गांधी
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
जालना

भारतीय समाज में नारी को बचपन से ही संस्कार दिए जाते है। उसे वह संस्कार हमेशा साथ में रखना पडते है। जैसे कम बोलना, हँसना नही, हमेशा समझदार बनकर रहना। स्त्री का जीवन बचपन से ही अँधेरे में जाता है। नारी को दुय्यम स्थान दिया जाता है। हमेशा पुरुष का ही बोलबाला रहता है। पुरुष वर्ग स्त्री को क्यों नहीं अनमोल समझता। उसका मन हमेशा कोमल होता है। जिससे वह खूबसूरत बनती है। उसके ममतामयी रुप को हमेशा छल कपट ही मिलता है। धार्मिकता के कारण नारी का शोषण किया जाता है। वह इस प्रकार से -

"परिवार पुरजन माहि राजाहि प्राण प्रिय सि जानिबी
तुलसी शीलू सनेह लखि निज किंकरी करि मानेबी।"[1]

तुलसीदास वस्तुत: मध्य काल के कवि है। वे तत्कालीन का प्रतिनिधित्व करते है। वह युग सामंतवादी और इस्लाम का शासन था। जनता पर हर तरह के अत्याचार हो रहे थे। समाज में हर तरह की बुराईयाँ थी। सती जैसी प्रथा भी प्रचलन में आयी थी। शुद्रों के हाल तो हमेशा ही भारतीय समाज में होते आये है उसी तरह से भविष्यकाल में भी नारियों के हाल शूद्रों से कम नहीं थे। वह इस प्रकार से -

"नारी सुभाव सत्य कवि कहहीं। अवगुन आठ सदा डर रहही। साहस, अनृत चपलता माया। भय अविवेक, असौचअदाया।।"[2]

कबीर दास धर्म, जाति, अंधविश्वासों को उखाड फेंकते। आज की नारी इन सब बातों को छोड़कर काफी आगे निकल आई है। आज नारी को आगे बडने की होड लगी है। नारी के जीवन में काफी परिवर्तन आये है। आज वह हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है उसमें परिवर्तन हो रहा है।

पहले नारी का जीवन घर की चार दीवारों में ही बीत जाता था। घर गृहस्ती और बाल बच्चों में ही सबकुछ गुजर जाता था। उसका अपना जीवन सीमित था। नारी की ओर एक बड़ी जिम्मेदारी दी जाती थी घर संभालने की, उसे घर की इज्जत समझकर घर के अंदर ही रखा जाता था। उसे केवल एक माँ, एक पुत्री, पत्नी के रुप में देखा जाता था।

आज के स्त्री का रहन सहन वेशभूषा बदल गया है। वह अपनी मनचाही वेशभूषा कर सकती है। परंतु स्वतंत्रता को अपनाना आधुनिकता नहीं है। आज नारी को शक्ति का रुप माना जाता है। झाँसी लक्ष्मीबाई और पन्ना धाय जैसी नारियों ने इतिहास में नारी शक्ति को सिद्ध किया है।

देश में नारी जैसी जैसी आगे जा रही है वैसे ही उनके साथ हुई सामूहिक दूष्कर्म और हत्या की घटना ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया है। यही जानकारी सरकारी आंकडों से आयी है। वह चिंता को बढ़ानेवाली है।

"एनसी आरबी के आंकडे बताते हैं कि देश में साल 2018 की तुलना में 2019 में महिलाओं के खिलाफ अपराधों में खासी बढ़ गयी है। साल 2019 में भारत में रोजाना औसतन 87 दूष्कर्म के मामले सामने आए है और महिलाओं के खिलाफ अपराध के चार पाँच हजार 861 मामले दर्ज किए गए।"[3]

आजादी के पहले नारी को स्वतंत्रता नहीं दी जाती थी। भारत में नारी को मानवियों अधिकारों से हमेशा वंचित रखा जाता था। नारी को राष्ट्र के विकास में सहयोग नहीं दिया जाता था। परंतु बीसवीं सदी के बाद नारी को स्वतंत्रता दी और वह अपनी

प्रतिभा प्रदर्शित करने लगली है। उसे शिक्षा का अधिकार प्राप्त हुआ। वह उसके लिए एक बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। उन्होंने हर क्षेत्र में प्रगति कर दी। उन्होंने एक भी क्षेत्र प्रगति बिना नहीं छोडा था। आज नारी चार दीवारों से बाहर आकर अपने स्वतंत्र निर्णय लेने लगी है। वह अपने बलबुते पर खड़ी हो रही है। उसे पुरुषों के उपर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं रही। नारी को यह आजादी मिलने को काफी संघर्ष और मेहनत करना पड़ी।

संदर्भ सूची :

1. रामचरित मानस - (बाल कांड, पृ. सं. 335-4)
2. एन सी आर बी की ओर से 29 सितंबर को जारी भारत में अपराध - 2019